संसार वृक्ष

हे भव्य आत्मन् ! जिस संसार को हम सुख का कारण मान रहे हैं उसकी वास्तविकता को दर्शाने वाला यह चित्र है-
काल(मृत्यु) रूपी विकराल हाथी जीवन वृक्ष को समूल उखाड़ने में तत्पर इसे हिला रहा है। दिन-रात रूपी सफेद और काले चूहे आयु की शाखा को काट रहे हैं। नीचे मुँह खोले चार अजगर चार गतियाँ नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव हैं, जिनका ग्रास बना जीव भटक रहा है। डाल से लटका मोही संसारी प्राणी स्त्री पुत्र आदि कुटुम्बीजन रूपी मधुमक्खियों से घिरा हुआ, विषयभोग रूपी छत्ते से टपकने वाली शहद बिन्दुरूपी क्षणिक इन्द्रिय सुख की इच्छा करता हुआ सारे कष्टों को सहन कर रहा है। विमान में बैठा देव यानि सद्गुरू उसे बार-बार संसार छोड़ने का, मोक्षमार्ग पर चलने का उपदेश दे रहे

दुःख समय से पहले मिले तो व्यक्ति शायद मजबूत बनकर बाहर निकलता है लेकिन सुख समय से पहले मिले तो शायद वही व्यक्ति शैतान बनकर बाहर निकलता है।

Scanned by CamScanner